आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:-10-12-14

इस संगमयुग पर अपना और ड्रामा में उसके पार्ट का ऐक्यूरेंट नॉलेज देकर हमें निश्चय बुद्धि बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिव ने कहा, मीठे बच्चे - माया बड़ी जबरदस्त है, इससे खबरदार रहना, कभी यह ख्याल न आये कि हम ब्रह्मा को नहीं मानते, हमारा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है.

यह तो हम सब जानते है कि हम सब आत्माये पहले शूद्र थी फिर शिव बाप ने आकर ब्रह्मा मुख द्वारा ज्ञान देकर हमें शूद्र से ब्राह्मण बनाया. इस पर से ही गायन है की हम सब है ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण. हम सब शिव बाप और ब्रह्मा-माँ के बच्चे, ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण है. हम अपने ही बेहद के माँ-बाप को कैसे अलग कर सकते हैं. यह बात का हमें पुरा निश्चय होना चाहिए कि शिव और ब्रह्मा कम्बाईन है जिसे ही हम प्यार से हमारे बाप-दादा या मात (ब्रह्मा माता)- पिता (शिव-पिता) कहते है. हम सब ब्राह्मण उनके एडप्टेड सपूत बच्चे है तो सोचो कोई भी सपूत बच्चा अपने माँ-बाप को अलग करेगा?

आज की मुरली से बाप-दादा के कम्बाईन रुप पर हमारा निश्चय पक्का करने के लिए कहे गये कुछ महा-वाक्यों -

- बाबा ने कहा, बच्चे यह तो जानते है कि शिवबाबा को अपना रथ (शरीर) नहीं है. बाप ने खुद कहा है - मैं इनकी भृकुटी के बीच में बैठता हूँ. ब्रह्मा का शरीर लोन पर लेता हूँ. ब्रह्मा की आत्मा भृकुटी के बीच में बैठती है तो बाप भी यहाँ ही आकर बैठते है. इस भृकुटी में ब्रह्मा भी है तो शिवबाबा भी है.

- बाबा कहते है अगर यह ब्रह्मा नहीं होता तो शिवबाबा आप बच्चों को एडप्ट कैसे करता? यह ज्ञान कैसे सुनाता? यह तुम बच्चे जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल है तो वह ज्ञान ब्रह्मा तन से सुनाते हैं.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चों को पता है कि हम शिवबाबा (जो ब्रह्मा तन में हैं) के पास यहाँ बैठे है. ऐसे तो नहीं समझेंगे की शिवबाबा ऊपर में है. जैसे भक्तिमार्ग में कहते थे

शिवबाबा ऊपर में है, उनकी प्रतिमा यहाँ पूजी जाती है (इससे तो हम फिर भी नीचे गिरते ही आये). अब शिवबाबा स्वयं कहते हैं मैं इस ब्रह्मा मुख द्वारा ही तुम्हें कहता हूँ, मुझे याद करो. ब्रह्मा तो खुद कहते हैं - शिवबाबा को याद करो.

- बाबा कहते है मैं इस ब्रह्मा मुख द्वारा ही तुम्हें कहता हूँ, मुझे याद करो. यह मंत्र भी मैं ब्रह्मा मुख द्वारा देता हूँ. ब्रह्मा ही नहीं होता तो मैं यह मंत्र तुम्हें कैसे देता? ब्रह्मा नहीं होता तो तुम शिवबाबा से साकार में कैसे मिलते? यहाँ मेरे पास, मेरी गोदी में कैसे आते? सदा यह बुद्धि में रहे कि शिव-बाप इस ब्रह्मा तन में है तो तुम्हारी याद भी सहज हो जायेंगी.

<u>हमारी कर्मातित अवस्था का विनाश से सम्बन्ध</u> ----

- बाबा समझाते हैं एक तरफ लड़ाई की तैयारी होगी, दूसरे तरफ तुम्हारी कर्मातित अवस्था होगी. पूरा कनेक्शन है फिर जब लड़ाई पूरी हो जाती है, तब तूम सतयुग में ट्रांसफ़र हो जाते हो.

- बाबा ने समझाया है पहले तो शिव की रुद्र माला (मनुष्य आत्माओं की माला) बनती है. तुम समझते हो अब विनाश तो सामने खड़ा है. अभी तुम्हें अपने में योगबल इकट्ठा करना है और दैवी-गुण धारण करने है.

- बाबा कहते है तुम बच्चे समझते हो की अभी सब की रिटर्न जरनी है. दुखधाम से सुखधाम में जाते है तो उनको याद करना है. बाप आते ही संगम पर है जबकि दुनिया को बदलना है.

- बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को सर्व दुखों से छुड़ाकर नई पावन दुनिया में ले जाने. मनुष्य तो शांति-शांति मांगते है लेकिन असूल शांति तो शांतिधाम में होगी. फिर सतयुग में सुख-शांति होगी, क्योंकि वहाँ एक ही दैवी-देवता धर्म होता है. अभी हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होती है. आगे चल के देखेंगे तो बहुत कहेंगे कि बरोबर विनाश तो होगा ही.

ॐ शांति.